Sl. No. of Q.P. : 2330

[This question paper contains 3 printed pages)

Your Roll No. : ....

~~Sl. No. of Q. Paper~~ : [redacted]

Unique Paper Code :12057607_OC

Name of the Course : **B.A. (Hons.) Hindi CBCS-DSE**

Name of the Pape : Lok Natya (HDSE-A)

Semester : VI

Ramanujan College Library
Kalkaji, New Delhi-110019

Time: 3 Hours **Maximum Marks : 75**

छात्रों के लिए निर्देश : (इस प्रश्न पत्र के प्राप्त होने पर तुरंत शीर्ष पर अपना रोल नंबर लिखें)

1 • सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 10×3=30

(क) पिया मोर गइलन परदेस, ए बटोही भइया !
रात नाहीं नींद दिन तनी ना चएनवा, ए बटोही भइया,
सहतानी बहुते कलेस,ए बटोही भइया!
रोवत- रोवत हम भइली पगलिनियाँ, ए बटोही भइया,
एको न भेजवलन सनेस, ए बटोही भइया!
नाहके जवानी हमके दिहलन बिधाता, ए बटोही भइया,
कछु दिन में पाकी जइहन केस, ए बटोही भइया !

अथवा

तोहरे कारनवाँ परानवाँ दुखित बाटे,
दया कऽ के दरसन दे दऽ हो बलमुआँ।
काइ काइलीं चूकवा कि छोड़लऽ मुलुकवा तूँ
कहलऽ ना दिलवा के हलिया बलमुआँ।
साँवली सुरतिया सालत बाटे छतिया में,
एको नाहीं पतिया भेजलवऽ बलमुआँ।

(ख) ऋषि मुनि संन्यासी योगी काल कै ताल नहीं सै।
काल छली को जीत सकै कोए इंद्रजाल नहीं सै।

पैदा हो, हो रोज मरण की आछी आल नहीं सै ।
कल्पित जीव नै सदा रहण की बिल्कुल टाल नहीं सै।
लख्मीचंद कोए माल नहीं सै जो गांठ बाँध के लेरा।

अथवा

वेद रीति और हवन कुण्ड एक श्रेष्ठ सा घर चाहिए सै।
इंद्रजीत पराक्रमी जैसा मेरे को वर चाहिए सै।। टेक।।
मात पिता की सेवा करके, चरणा में सर धरता हो।
समदम उपरम सात धाम कुछ संयम यज्ञ भी करता हो।
अग्नि होत्र पंच महायज्ञ ओ३म का नाम सूमरता हो।
तीन काल और संध्या तर्पण में मन इधर उधर ना फिरता हो।
कृष्ण जैसा योगी हो, ना तै अर्जुन सा नर चाहिए सै।

(ग) आज म्हारा मन में उठे उमंग, करूँगा श्री सतगुरु को संग
पार बृहम्म परमेसर सतगुरु, जेसे निरमल गंग
ग्यान का गोता मार के न्हावां, धोवां मल मल अंग।
छोड़ां सब संसारी रगड़ा, हुवो आज चितभंग
राजा मेल को रेणो छोड़ां, छोड़ां सेज पलंग
धर जोगी का भेस फिरांगा, चड़्यो है एसो रंग।

अथवा

अरे पिंगलादे राणी, यातो जिंदगानी थां बिन धूल है।। टेक।।
पतिवरता पिंगला की परीक्षा, लेवा की हुई होड़,
सत साचो कर गइ पिंगलादे, हमसे नातो तोड़।
बात- बात को बण्यो बतंगड़, कर बेठो हं भूल,
आज हुई हासी की बगासी, हुवो फूल तिरसूल।
बिछड़ गई पिंगलादे प्यारी, बुरी करी करतार,
कोन दिसा में जइने ढूंढू, किनसे करूँ पुकार।

2• लोकनाट्य की अवधारणा पर विचार करते हुए रामलीला के स्वरूप पर प्रकाश डालिए।

अथवा 15

ख्याल के स्वरूप पर विचार करते हुए इसकी प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

3• नौटंकी शैली की दृष्टि से 'सुल्ताना डाकू' का विश्लेषण कीजिए।

अथवा 10

सत्यवान सावित्री सांग के केन्द्रीय भाव पर विचार कीजिए।

4• बिदेसिया की मूल संवेदना पर प्रकाश डलिए।

अथवा

बिदेसिया के नाट्य शिल्प पर विचार कीजिए। 10

5. 'राजयोगी भरथरी' की चारित्रिक विशेषताएँ लिखिए।

अथवा

'राजयोगी भरथरी' माच के मूल प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। 10